पाठ 15

शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर–व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ, कब हारा।
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु–किनारे,

बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे–प्यारे
उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष से,
आग राम के शर से।
सिंधु देह धर ''त्राहि–त्राहि''
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।
सच पूछो तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
संधि–वचन संपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता
उसके पीछे जब जगमग है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

संपूज्य	–	पूजने के योग्य	बल का दर्प	–	शक्तिशाली का अहंकार
रिपु	–	शत्रु	विनत होना	–	झुकना, विनम्र होना
भुजंग	–	साँप	गरल	–	विष
अनुनय	–	विनती, प्रार्थना	नाद	–	स्वर, आवाज़
पौरुष	–	मर्दानगी	शर	–	बाण
मूढ़	–	मूर्ख, बुद्धिहीन	दीप्ति	–	कांति, चमक
नर–व्याघ्र	–	बाघ के समान शक्तिशाली और चालाक व्यक्ति			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पांडवों को कौरवों ने कब तक कायर समझा?
2. क्षमा किसे शोभा देती है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. कवि ने 'नर–व्याघ्र' कहा है–

   (क) अर्जुन को (ख) युधिष्ठिर को

   (ग) भीष्म पितामह को (घ) दुर्योधन को ( )

2. इस कविता में कौन किसको समझा रहा है–

   (क) श्रीकृष्ण अर्जुन को (ख) श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को

   (ग) भीष्म पितामह युधिष्ठिर को (घ) भीष्म पितामह अर्जुन को ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. विषहीन, विनीत और सरल साँप द्वारा दी गई क्षमा को निरर्थक क्यों कहा गया है?
2. सागर ने राम की दासता कब स्वीकार की?
3. सहनशीलता, क्षमा, दया आदि गुणों की कद्र कब होती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता का मुख्य संदेश क्या है? विस्तार से लिखिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए

   (क) क्षमा शोभती उस भुजंग को ..... विनीत, विषहीन, सरल हो।

   (ख) सच पूछो ..... तो शर में ही, जिसमें शक्ति विजय की।

भाषा की बात

1. 'विषहीन', 'क्षमाशील' की तरह 'हीन' एवं 'शील' जोड़कर दो–दो नए शब्द बनाइए।
2. प्रस्तुत कविता को पढ़ने पर हमारे मन में उत्साह का भाव पैदा होता है। **इसी प्रकार जब किसी रचना को पढ़ते हैं, तो हमें आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार प्राप्त आनंद को साहित्य में रस कहते हैं।**

पाठ से आगे

1. विनयहु न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीति।

   बोले राम सकोप तब, भय बिनु होहिं न प्रीति।।

   शिक्षक की सहायता से दोहे का अर्थ करते हुए पता कीजिए यह दोहा कहाँ से उद्धृत किया

गया है?

इसी भाव की अन्य रचना को ढूँढ़कर लिखिए।

2. यदि आप दुर्योधन के स्थान पर होते तो क्या करते? अपने विचार लिखिए।

यह भी करें

सागर द्वारा श्री राम की सेना को रास्ता देने की कथा अपने अभिभावक अथवा गुरुजन से जानिए।

संकलन

दिनकर की अन्य कविताओं को भी पढ़कर संकलित कीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

क्षमा वीरस्य भूषणम्

केवल पढ़ने के लिए

नरेंद्र से विवेकानंद

प्रख्यात अंग्रेज़ कवि विलियम वर्ड्सवर्थ की एक प्रसिद्ध कविता है—एक्सकरशन। एक बार प्रोफेसर हेस्टी छात्रों के समक्ष इस कविता की व्याख्या कर रहे थे। 'ट्रांस' जैसे महत्त्वपूर्ण शब्द की व्याख्या करते समय प्रोफेसर साहब ने दक्षिणेश्वर मन्दिर के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस का उल्लेख किया। इसी सन्दर्भ को आगे बढ़ाते हुए प्रोफेसर साहब ने बताया कि श्री रामकृष्ण अक्सर 'ट्रांस' (समाधि) की स्थिति में आ जाते हैं। 'ट्रांस' एक प्रकार का आनंदमय आध्यात्मिक अनुभव है। इसी संदर्भ में यह जानना उचित होगा कि श्री रामकृष्ण ईश्वर की उपासना जगन्माता के रूप में करते थे। वे देवी की उपासना दक्षिणेश्वर में काली की मूर्ति के रूप में किया करते थे मूर्ति पूजा द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करने के उनके इस विचार ने मूर्ति–पूजा विरोधी आंदोलन को एक घातक आघात पहुँचाया। इसके पूर्व भी नरेंद्र ने श्री

रामकृष्णके विषय में सुन रखा था। इस संत के बारे में उनके अपने कुछ संदेह थे। लेकिन, जब उन्होंने प्रोफेसर हेस्टी से भी उनके विषय में सुना तो वे दक्षिणेश्वर के इस संत से भेंट करने को आतुर हो उठे।

ऐसा कहा जाता है कि जाड़े की एक दोपहर में संभवतः 15 जनवरी, 1882 ई. रविवार को नरेंद्र श्री रामकृष्ण परमहंस से भेंट करने गए। श्री रामकृष्ण परमहंस से नरेंद्र की यह एक ऐतिहासिक भेंट थी। यह उनके जीवन का एक नया मोड़ था; क्योंकि उसके बाद में नरेंद्र के जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अध्याय प्रारंभ हुआ। उनका जीवन कुछ असामान्य कार्य के लिए ढालना था। कुछ अत्यधिक शक्तिशाली एवं गतिशील जीवन के लिए, वह जीवन क्या था? वह था—नरेंद्रनाथ का स्वामी विवेकानंद में रूपांतरण। श्री रामकृष्ण की नरेंद्र से प्रथम भेंट ही उनके लिए आनंदमय एवं रोमांचकारी थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री रामकृष्ण की एक सच्चे शिष्य की खोज ईश्वर द्वारा आज पूरी हो गई। ऐसा उन्होंने भावावेश में आकर घोषित किया—'ओ मेरे प्यारे पुत्र! मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।' श्री रामकृष्ण से उनकी इस ऐतिहासिक भेंट के बारे में हमें यह जानना चाहिए कि स्वयं नरेंद्र ने क्या कहा—''मैंने इस व्यक्ति के विषय में सुना और उनसे भेंट करने गया। वे देखने में बिल्कुल एक सामान्य व्यक्ति प्रतीत हुए जिनके विषय में कुछ उल्लेखनीय नहीं था। उन्होंने सीधी सरल भाषा का प्रयोग किया। मैंने सोचा—क्या यह व्यक्ति एक महान् गुरु हो सकता है? मैं उनके निकट बढ़ता गया और वही प्रश्न पूछा, जो मैं दूसरों से जीवनभर पूछता रहा था।''

''श्रीमन्! क्या आप ईश्वर में विश्वास रखते हैं?'' उत्तर मिला—''हाँ।'' ''कैसे?'' ''क्योंकि मैं उसे देखता हूँ ठीक वैसे ही जैसे तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ।''

''उनके इन उत्तरों ने मुझे तुरंत प्रभावित किया। यह प्रथम अवसर था, जब मैंने एक ऐसे व्यक्ति को पाया जो यह कहने का साहस रखता था कि उसने ईश्वर को देखा है।''